Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 | Impact Factor - 7.139 | Indexed (SJIF)

05 Sept. 2021 | Special Issue- 43 | Vol. I

Literature, Culture and Media

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal Dr. Kishan Pawar

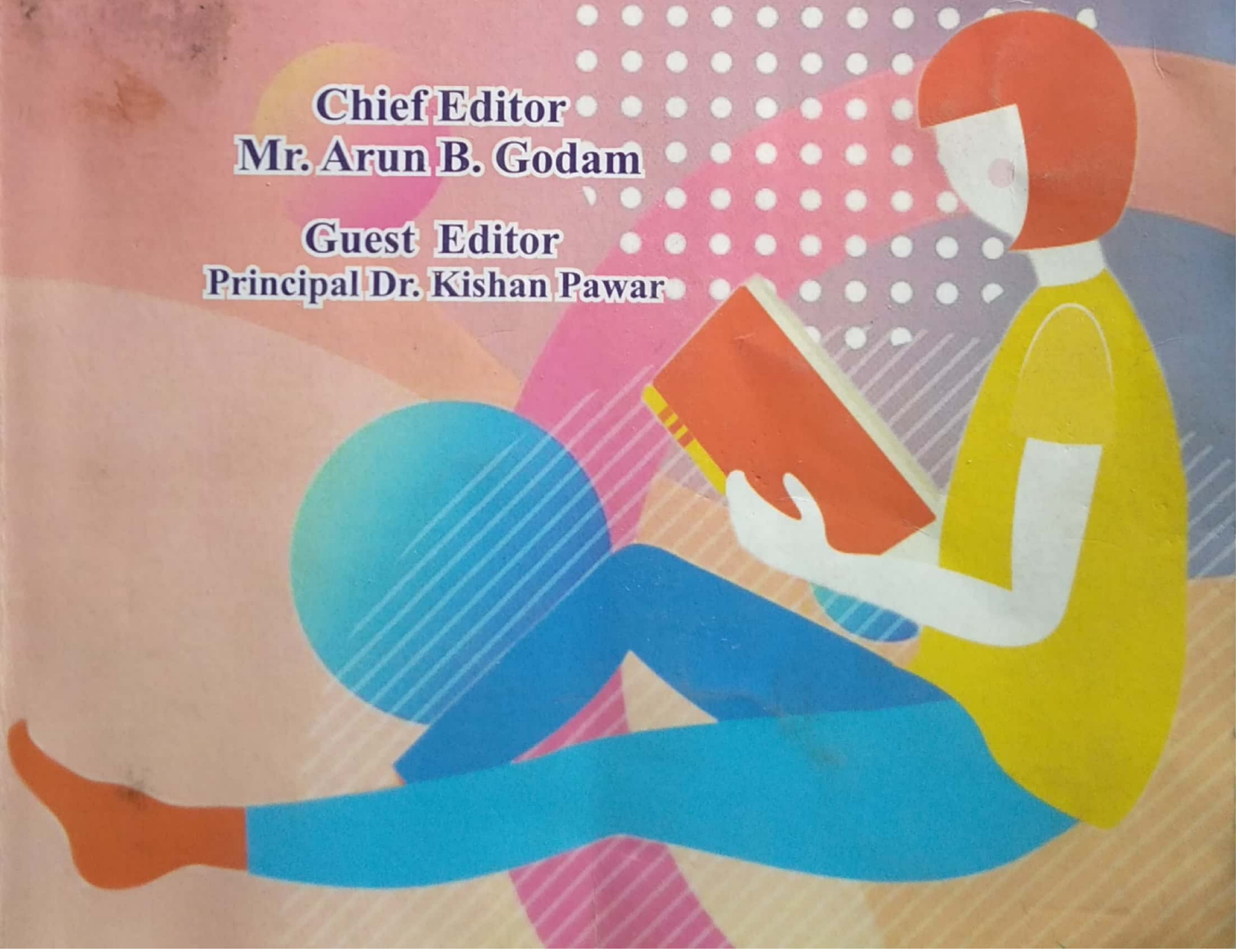

Scanned with CamScanner

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE – 43, Vol 1

Title of the issue : **Literature, Culture and Media**

© All rights reserved with the College & publisher Price : Rs. 600/-

Editor – Arun Godam
Latur

Guest Editor
Principal Dr. Kishan Pawar

Published BY
Shaurya Publication
Old MIDC , Near Kirti Gold Chowk, Latur
Email- hitechresearch11@gmail.com

Printed By.
Shaurya Offset
Old MIDC , Near Kirti Gold Chowk, Latur
Email- hitechresearch11@gmail.com

EDITION :
Sept. 2021

Scanned with CamScanner

14. साहित्य, संस्कृति और मीडिया के उपलक्ष्य में प्रस्तुत शोधालेख "आधुनिक साहित्य में चित्रित मनोवैज्ञानिकता" 50
प्रा.डॉ.संजय व्यंकटराव जोशी

15. 'अर्ध्दनारीश्वर' में भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय 52
प्रा.डॉ. काकासाहेब गंगणे, , प्रा.डॉ. गजानन सवने

16. श्री तेजपाल धामा के कथात्मक साहित्य में भारतीय संस्कृति 54
सुश्री .स्वाति हिराजी देडे , डॉ.विनोदकुमार विलासराव वायचळ

17. साहित्य और संस्कृति 56
प्रा.डॉ. वडचकर शिवाजी

18. वाचन संस्कृती आणि माध्यमे 58
प्रा.अशोक शि.खेत्री

19. वाचनसंस्कृती 60
प्रा.ज्ञानेश्वर को. गवते

20. **ऑनलाइन शिक्षण आणि आपण** 62
सह.प्रा.उघडे सुहास मुरलीधर

21. साहित्य, संस्कृति व प्रसार माध्यमे 65
डॉ. लक्ष्मण बळीराम थिट्टे

22. वाचन संस्कृतीवर समाजमाध्यमांचा पडलेला प्रभाव 67
प्रा. डॉ. रमेश औताडे

23. **वाचनसंस्कृती आणि प्रसारमाध्यमे** 70
सहा. प्रा.डा. रवींद्र बाबासाहेब ढास

24. अध्ययन-अध्यापनात माध्यमांची भूमिका 74
डॉ. सीता ल.केंद्रे

25. साहित्य आणि प्रसार माध्यमे 77
प्रा.डॉ.लक्ष्मण गित्ते

26. अध्ययन- अध्यापनात माध्यमाची भूमिका 79
प्रा.डॉ. रामहारी मायकर

Scanned with CamScanner

Special Issue 43, Vol. 1
Sept. 2021 | SJIF

'अर्ध्दनारीश्वर' में भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय

प्रा.डॉ. गजानन सवने
सहायक प्राध्यापक
वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, जि. बीड

प्रा.डॉ. काकासाहेब गंगणे,
सहयोगी प्राध्यापक,
सुंदररावजी सोळंके महाविद्यालय, माजलगाव, जि. बीड

प्रस्तावना :-

विष्णु प्रभाकर जी हिन्दी साहित्य के मुर्धन्य साहित्यकार हैं। जिन्होने साहित्य के लगभग सभी विधाओं में प्रखर लेखन कार्य किया हैं। विष्णु प्रभाकर जी को देखकर कहा जाता सकता है कि उनके विशाल ह्रदय मानवता के लिए समर्पित हैं। व्यक्तित्व की यही समस्त विशेषताएँ हमे उनके साहित्य में दष्टिगत होती। 'आवारा मसीहा' का लेखन कार्य उन्होने चौदह वर्षो के अथक परिश्रम के बाद किया था। जो कि साहित्य जगत की एक अविस्मरणीय घटना है। विष्णु प्रभाकर जी ने नाटक विधा में विलक्षण योगदान हैं। इसके साथ उन्होने उत्कष्ट कहानी एवं उपन्यासों का सृजन किया है। 'अर्ध्दनारीश्वर' यह इनका प्रसिध्द उपन्यास हैं। इस कृति को साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उनकी प्रत्येक रचना में मानवीय मूल्य एवं आदर्शों के साथ बृहत सामाजिक हित भी भावना निहित होती हैं।

'अर्ध्दनारीश्वर' उपन्यास घटना प्रधान एवं चरित्र प्रधान हैं। उसमे बलात्कार की घटना प्रमुख है। सुमिता का प्रमुख नारी चरित्र हैं। यह उपन्यास नारी विमर्श का महत्वपूर्ण हैं। बलात्कार पीडित नारी की संवदेना को सृजित करने का काम विष्णु प्रभाकरजी ने किया है। उसके साथ भारतीय एवं पाश्चात्ये संस्कृती का समन्वय करके नये नारी पुरुषों के मापदंड को समाज के सामने रखने काम किया हैं। 'अर्ध्दनारीश्वर' उपन्यास तीन खण्डों में विभाजित हैं। उपन्यास का पहला खण्ड व्यक्ति का मन है, जिसमें पात्रों के मानसिक अंतर्द्वन्द्व को अंकित किया है। समाज मन दुसरा खण्ड है, जिसमें विभिन्न घटनाओं को लेकर सामाजिक प्रतिक्रियाओं का आकलन है। तीसरा खंड अन्तर मन है, जिसमें व्यक्तियों के कुंठाओं एवं शंकाओं को दूर कर एक स्वस्थ मानसिकता की आधार भूमि तैयार की गई है।

विष्णू प्रभाकर जीने बलात्कार नारी को भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति में बलात्कार पीडित नारी को भारतीय संस्कृति में बलात्कार पीडित नारी कों बचछलन, अभागी नारी के रुप में देखते है। तो पाश्चात्य संस्कृति में नारी को बचछलन कहकर नहीं पुकारते है। 'अर्ध्दनारीश्वर' उपन्यास की सुमिता अपने पति, नंदन और बच्चों की गुण्डो से जान बचाने के लिए गुण्डो के साथ जाती है। सुनिता कहती है, "मैं कहती हूँ, उसे मत छुना। मैं चलूँगी तुम्हारे साथ।"[1] इसके बाद सुमिता को गुण्डे बलात्कार कर देते है। लेखकने बलात्कार करनेवाले गुण्डे के मुँह यह कहलाते है की, बलात्कार क्यों कर रह हैं। एक गुण्डा कहता है, "मै इसे मार कर शहिद बना दूँ। नहीं, नहीं, यह जिन्दा रहेगी आर तडपेगी गरम रेत पर पडी मछली की तरह। मुझे इन्तकाम लेना है उन सफेद पोशों से ....।"[2] यह बदले के भावाना को आम नारी के जीवन को नरक बनाने काम यह कर रहें।

बलात्कार होने के, बाद भारतीय संस्कृति में नारी को समाज, घर के पति अलग नजरे से देखते है। सुमिता का पति अजित कहता है कि, "क्या यह सम्भंव नहीं कि रति क्रिया में वह मुझ से सन्तुष्ट नहीं हो सकी, पर परम्परागत मूल्यों के कारण एक हिन्दू नारी होने के नाते उसने इस बात की कभी शिकायत नहीं की। नहीं करना चाहीं, लेकिन अनजाने और अनचाहे भी वह असन्तोष धीरे – धीरे जड जमाता रहा, उसके अपनी इच्छा से उनके साथ जाने का [illegible] इसी प्रकार भारतीय सांस्कति में पीडित नारीयों का साहारा बननेवाले सहदय वाले व्यक्ति मिल जाते हैं। लेकिन समाज पीडित नारीकों हीन नजरेसे देखते है। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति में बलात्कार पीडित नारी को मान सम्मान प्राप्त करते हैं है। लेखक ने राजकली के माध्यम से भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का सम्नवय दिखायाँ हैं। राजकली कहती है, "बहुत सी युवतियाँ है, जो अपने यारों के साथ मुँह काला करती है या उनकी भाषा में कहूँ तो आनन्द मनाती है, भेद खुलने पर जरुर वे कुछ दिन के लिए बदनाम हो जाती है, फिर लोग उन्हे भूल जाते है। वे मेरी तरह हमेशा–हमेशा के लिए 'अछूत' नहीं हो जाती।"[4] राजकली कुछ दिन कुंठाग्रस्त रहती है। उसके साथ शादी भी कोई करने को तैयार नहीं होता। लेकिन एक ख्रिश्चिन अध्यापक विलयम उसके साथ शादी करता है और उसे बलात्कार पीडित होने के भय से मुक्ति मिलती है।

बहुविवाह पध्दती दोनों संस्कृति में है। भारतीय संस्कृति में पुरुष बहुविवाह करता है और नारी को बहुविवाह की अनुमती नहीं है। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति में नारी पुरुष दोनों ही बहुविवाह करते हैं। 'अर्ध्दनारीश्वर' उपन्यास में लेखक ने श्यामला पात्र के माध्यम से भारतीय संस्कति का फोल खोला है। वह अपने जीवन को पुर्नत्व लाने के लिए शादी करती है। वह तीन पुरुषों के साथ विवाह करती है लेकिन उसे कोई भी अपनाता नहीं है, इसलिए समाज उसे वेश्या समझता हैं। श्यामला स्वंय कहती है, "नाना प्रकार के लांछन लगाते हैं यहाँ के लोग। वेश्यातक कहते है।"[5]

पाश्चात्य संस्कृति का मुक्त यौन सम्बन्ध पर 'अर्ध्दनारीश्वर' उपन्यास में चित्रण किया है। सुमिता [illegible] डेविड के साथ उसी के रुप में नहीं जाती क्योंकि उसके मन पर भारतीय संस्कृति के प्रतिव्रता का प्रभाव है और वह [illegible]

Scanned with CamScanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 43, Vol. 1 Sept. 2021	Peer Reviewed SJIF	ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

पति से एकनिष्ठ है। इसलिए डेविड सुनिता से पुछता है कि क्यों नही आती मेरे रुम में। तो उसे कहती है, "अगर इस समय मेरे स्थानपर तुम्हारी पत्नी हो और तुम्हारे स्थान पर मेरे पति तो क्या तुम उसे सह सकोंग?"[6] ऐसा सवाल करती है तो डेविड कहता है की, हमारे यहाँ ऐसा कोई बन्धन नही है। सुमिता उसे समझाती है। इसमे भारतीय संस्कति के गुण उजागर होते है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि, आज भारतीय संस्कति का विश्व में नाम लिया जा रहा है। लेकिन जिस भारतीय संस्कृति के रहन सहन, खान पान विचारों को विश्व में सम्मान रहा है। लेकिन जिस भारतीय संस्कृति का प्रभाव पाश्चात्य देशों में हो रहा है। उसी प्रकार पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर हो रहा हैं। भारतीय संस्कृति में नारी को स्वयं का स्वतंत्र्य नहीं, परम्परा, प्रथा, संस्कृति में जकडी रहती है। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण नारी आज पुरुष के आगे है। विष्णु प्रभाकर जी ने 'अर्ध्दनारीश्वर' उपन्यास में भारतीय संस्कृति के दोषो को दुर करना तथा पाश्चात्य संस्कृति के अच्छे मूल्यों को अवगत करना चाहते हैं। इससे एक उत्कृष्ट नारी पुरुष 'अर्ध्दनारीश्वर' बन जाएगें।

संदर्भ :-

1. विष्णु प्रभाकर, अर्ध्दनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 34
2. विष्णु प्रभाकर, अर्ध्दनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 146
3. विष्णु प्रभाकर, अर्ध्दनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 72
4. विष्णु प्रभाकर, अर्ध्दनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 56
5. विष्णु प्रभाकर, अर्ध्दनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 76
6. विष्णु प्रभाकर, अर्ध्दनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 148

Scanned with CamScanner

ISSN-2320-4494
RNI No.MAHAUL03008/13/2012-TC
Impact Factor : 2.7286

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

December Special Issue : II - 2022

ARTS | COMMERCE
SCIENCE | AGRICULTURE
EDUCATION | MANAGEMENT
MEDICAL | ENGINEERING & IT I LAW
PHARMACY | PHYSICAL EDUCATION
SOCIAL SCIENCE | JOURNALISM
MUSIC | LIBRARY SCIENCE |

www.powerofknowledge.co.in
E-mail : powerofknowledge3@gmail.com
Editor
Prof.Dr.Sadashiv H. Sarkate

SCAN AnyScanner

RNI No. MAHAUL03008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Peer Review Refereed Research Journal

Editor
Dr. Sadashiv H. Sarkate

● **Mailing Address** ●
Dr. Sadashiv H. Sarkate
Editor : POWER OF KNOWLEDGE
Head of Dept. Marathi
Art's & Science College, Shivajinagar, Gadhi, Tq. Georai Dist. Beed-431 143 (M.S.)
Cell. No. 9420029115 / 7875827115
Email : powerofknowledge3@gmail.com /
shsarkate@gmail.com

Price : Rs. 300/-
Annual Subscription: Rs. 1000/-

SCAN AnyScanner

27	'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में स्त्री विमर्श	डॉ.कल्याण शिवाजीराव पाटील	116-120
28	डॉ.राही मासूम रजा के उपन्यासो में मुस्लिम विमर्श	शेख अब्दुल बारी अब्दुल करीम	121-124
29	राजी सेठ की कहानियों में पारिवारिक चेतना	प्रा. डॉ. आहेर संगिता एकनाथराव	125-128
30	किन्नर विमर्श (संकल्प कहानी के विशेष संदर्भ में)	प्रा. डा- बायजा कोटळे	129-133
31	परशुराम शक्ल के बाल काव्य में पर्यावरण संरक्षण	सुजाता मठपती	134-137
32	ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता में दलित चेतना ('बस्स! बहुत हो चुका' कविता की विशेष संदर्भ में)	प्रो. डॉ. के.बी. गंगणे प्रा. डॉ. गजानन सवने	138-141
33	मधुकर सिंह का 'उत्तरगाथा' उपन्यास में चित्रित दलित शोषण	डॉ. दस्तगीर पठाण	142-144
34	सुशीला टाकभौरे की कविता में दलित स्त्री विमर्श	डॉ चांदणी लक्ष्मण पंचांगे	145-148
35	जयप्रकाश कर्दम कृत्य 'छप्पर' उपन्यास में दलित चेतना	विकास सूर्यकांत वाघमारे	149-153
36	इक्कीसवीं सदी के उपन्यास साहित्य में आदिवासी विमर्श	कु. पठाण हिना अब्दुला	154-158
37	शिकंजे के दर्द में बाल दलित विमर्श	डॉ स्याली दलवी ओहोल	159-162
38	वृद्ध विमर्श और डॉ सूरज सिह नेगी के उपन्यास	प्रा.कु.राजकन्या राघोजी भगत	163-166
39	२१ वी शताब्दी के उपन्यास साहित्य में महानगरीय बोध	डॉ.अमर आनंद आलदे	167-170
40	इक्कीसवीं सदी की स्त्री चिंता और चिंतन	डॉ. संजीवनी जनार्धन राठोड	171-173
41	'हिन्दी दलित कथात्मक साहित्य हिन्दी साहित्य के लिए एक अनमोल देन'	प्रा.डॉ. दिपक नामदेव खिल्लारे	174-176
42	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों मे नारी जीवन की चिंता	डॉ.प्रकाश सटवाजी गायकवाड	177-181
43	'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता में व्यक्त बेटी की संवेदना	डॉ. मारोती यमुलवाड	182-186
44	मोहनदास नैमिशराय कृत हमारा जवाब में दलित सम्वेदना	डॉ.ज्ञानेश्वर गणपतराव रानभरे	187-192
45	२१ वीं सदी के हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श	डॉ. संतोष पवार	193-196
46	विभाजन की गाथा - रेत समाधी	प्रा. डॉ. द्वारका गिते-मुंडे	197-200
47	सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलितों की दशा व दिशा	प्रियंका प्रफुल दरवाड़े	201-205
48	२१वीं शताब्दी के साहित्य में दलित विमर्श	स्वाती पांडुरंग खाडे प्रा. डॉ. दत्तात्रय लक्ष्मण येडले	206-208
49	२१ वी शताब्दी के साहित्य में बाल विमर्श	सोनाली युवराज चित्ते	209-213
50	"मेहरुन्निसा परवेज का उपन्यास 'अकेला पलाश' में तहमीना की घुटन"	प्रा.व्ही.डी.कापावार	214-217
51	'शकुंतिका' स्त्री विमर्श के संदर्भ में	अमृता अनिल तौर	218-221

SCAN AnyScanner

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता में दलित चेतना
('बस्स! बहुत हो चुका' कविता की विशेष संदर्भ में)

प्रो. डॉ. के.बी. गंगणे
हिंदी विभागाध्यक्ष
सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय माजलगांव

प्रा. डॉ. गजानन सवने
सहाय्यक प्राध्यापक,हिंदी विभाग,
वसुंधरा महाविद्यालय,घाटनांदूर

समकालीन हिंदी साहित्य में दलित विमर्श एक महत्वपूर्ण विमर्श हैं। इस विमर्श ने भारतीय साहित्य मे अलग पहचान निर्माण की है। मराठी साहित्य में प्रथमः दलित साहित्य का उगम हुआ है । महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर में दलित साहित्य का उगम हुआ है। इस शहर से अस्मिता अस्मितादर्श नामक साहित्यिक पत्रिका प्रो. गंगाधर पानतावणे जी के संपादन में प्रकाशित होती थी। पानतावणे जी ने प्रथमः उन्ह लोगो के साहित्य को प्रकाशित करने का प्रयास किया है, जो शिक्षा व्यवस्था से दूर, गाँव के बाहर, सामाजिक व्यवस्था से दबे हुए है। इनके दुःख, पीडा, संवेदना को व्यक्त करने के लिए व्यासपीठ निर्माण करके दिया था।अस्मितादर्श मे लिखनेवाले सभी साहित्यकारो के प्रेरणास्थान डॉ.भीमराव आंबेडकर थे। डॉ. बी.आर. आंबेडकर के विचारो से यह साहित्यिक प्रस्थापित व्यवस्था से हजारो प्रश्न पूछे है। अपने हक्क, अधिकार के लिए क्रांती करने को प्रेरित हुए है। मराठी साहित्य से हिंदी साहित्य में दलित साहित्य का आगमन हुआ है। हिंदी साहित्य में दलित साहित्य के सभी विधाओं मे लिखा गया है। हिंदी साहित्य में ओमप्रकाश वाल्मिकि, सूरजपाल चौहान महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है।

ओमप्रकाश वाल्मिकि का हिंदी साहित्य के विकास में अतुलनीय योगदान है। प्रारंभिक दौर में उनकी अभिव्यक्ती का माध्यम कविता रही है। एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप मे सक्रिय रहने के साथ - साथ कविता के और उनका झुकाव लगातार बढता गया।

ओमप्रकाश वाल्मिकि के सदियों का संताप, बस्स! बहुत हो चुका, अब और नही, शब्द झूठ नही बोलते, चयनित कविताएँ (कविता-संग्रह), जूठन (आत्मकथा) सलाम, घुसपैठिए, अम्मा अँड अदर स्टोरीज, छत्तरी (कहानी - संग्रह), दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, मुख्यधारा और दलित साहित्य, दलित साहित्यः अनुभव, संघर्ष और यथार्थ (आलोचना), सफाई देवता (सामाजिक अध्ययन) आदि साहित्य प्रकाशित है। ओमप्रकाश वाल्मिकि जी को अनेक पुरस्कार एवं सम्मानों से सन्मानित किया गया है।

दलित साहित्य वर्णव्यवस्था के विरोध में निर्माण हुआ है। समाज की असमानता पर आधारित जीवन की विषमताओं, विसंगतियों के बीच दलित साहित्य का जन्म हुआ है। ओमप्रकाश वाल्मिकि व्यवस्था के बीच पैदा हुए लेखक है। वाल्मिकि स्वयं दलित है। दलितो का दुःख, दर्द, पीडा, वेदना को सहन करके अपने जीवन को समृद्ध किया है। इसीलिए ओमप्रकाश वाल्मिकि के साहित्य मे स्वानुभूती दिखाई देती

SCAN AnyScanner

है। उनके साहित्य मे यथार्थ बोध स्पष्ट रूप में दिखाई देता है-'बस्स! बहुत हो चुका' कविता में ओमप्रकाश वाल्मिकि दलित समाज को यथार्थ चित्रण करते है-

'जब भी देखता हूँ मैं
झाड़ू या गन्दगी से भरी बाल्टी
कनस्तर
किसी हाथ में
मेरे रंगो मे दहकने लगते हैं
यातनाओं के कई हजार वर्ष एक साथ
जो फैले हैं इस धरती पर
ठंडे रेत - कणों की तरह।"[1]

वाल्मिकि की कविता में दलित जीवन का संघर्ष दिखाई देता है। दलित व्यक्ति शिक्षा, समाज, आर्थिक, आदि व्यवस्था से झुंजता हुआ दिखाई देता है। ओमप्रकाश वाल्मिकि आपने कविता के बारे मे लिखते है- "कविता मेरे लिए आनन्द, रस, मनोरंजन केलिए नहीं हैं। न ही कविता का ऐसा उद्देश रहा होगा। कविता हमे मनुष्यता के निकट ले जाने का काम करती है।उम्मीदों के साथ जीवन में बदलाव की आकांक्षा उत्पन्न करती है। इसीलिए कविता ने संविधात्मक की अभिव्यक्ती ज्यादा गहरी होती है।"[2]

ओमप्रकाश वाल्मिकि ने अपने कविता में दलित लोगों पर हुए अन्याय,अत्याचारों, षडयंत्रों को यथार्थ चित्रण किया है। कवि वाल्मीकि लिखते है-

"'मेरी हथेलियाँ भीग- भीग जाती है
पसीने से
आँखों में उतर आता है
इतिहास का स्याहपन
अपनी आत्मघाती कुटीलताओं के साथ।"[3]

ओमप्रकाश वाल्मिकि ने डॉ. बी. आर.आंबेडकर जी के विचारो प्रेरित होकर दलितो के अस्मिता, स्वाभिमान, अधिकार केलिए लिखा है। उन्होने दलितो को शोषण करनेवाले व्यवस्था के विरोध में झाड़ू उठने की बात कियी है। ओमप्रकाश वाल्मिकि लिखते है-

"झाड़ू थामे हाथों की सरसराहट
साप सुनाई पडती है
भीड के बीच बियाबान
जंगल में सनसनाती हवा की तरह।"[4]

कवि ओमप्रकाश वाल्मिकि ने वर्णव्यवस्था का समर्थन करने वाले व्यक्तियों पर करारा व्यंग किया है। यह व्यक्ती वर्णव्यवस्था का समर्थन बहुत ही मिठ्ठी बातों से करते हुए लोगो को समझाते है। ऐसे व्यक्ती पर कवि लिखते है-

"वे तमाम वर्ष
वृत्ताकार होकर घुमते हैं
करते हैं छलनी लगातार
उँगलियों और हथेलियों को
नस-नस में समा जाता है ठंडा - ताप।"[5]

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने मधुर बात करनेवाले व्यक्ति का चरित्र चित्रण किया है। वह व्यक्ति सब को समान मानने की बात करते है और समान कोई नही है। अपने हाथों की उँगलियाँ क्या समान है? इससे स्पष्ट हो जाता है की, अपने मन में बैठे वर्ण व्यवस्था को छोडने के लिए तयार नही हैं। इसीलिए कवि दलित समाज को जागृत करता है।

ओमप्रकाश वाल्मिकि ने 21 शताब्दी मे जातीवाद, उच्च-निच्च, छुआछूत की भावना को अपने कविता मे चित्रित किया है। इसी के साथ कवि कहता है कि, भारत को आझाद होकर 75 वर्ष पूरे हुए है । दलितो के हक्क के लिए विशेष कानून है। इसके बावजूद भी दलितो पर अन्याय, अत्याचार होते हुए दिखाई देते है। इसीलिए कवि कहता है-

"बस्स!
बहुत हो चुका
चुप रहना
निरर्थक पडे पत्थर
अब काम आएँगे संतप्त जनों के !"[6]

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने सभी दलित समाज को अन्याय, अत्याचार, शोषण के विरोध में खडे रहने के लिए आवाहन किया है। अन्याय करनेवाले व्यवस्था की विरोध में निरर्थक पत्थर के जैसे बैठना नही है ।इस व्यवस्था के विरोध में संघर्ष करना है । वह संघर्ष डॉ. बी. आर. आंबेडकर जी ने हमे समझायाँ है। तभी जाकर हमे इन शोषण शोषण, अत्याचार, अन्याय, पीडा से मुक्ति मिल सकेंगी।

उपयुक्त विवेचन स्पष्ट हो जाता है की, ओमप्रकाश वाल्मिकि की ने आपनी कविता मे दलित समाज की संवेदनाओ को अत्यंत गहराएँ से चित्रित किया है। 21 वी शताब्दी मे नये षडयंत्र से दलितो का शोषण, अन्याय, अत्याचार, करनेवाले मनुवादी व्यक्तियो को यथार्थ रूप में कवि ने अपने कविता मे प्रस्तुत किया है। डॉ. विदुषी आमेटा ओमप्रकाश वाल्मिकि की कविता के बारे मे लिखते है,

SCAN AnyScanner

"ओमप्रकाश वाल्मिकि ने अपने कविता संग्रह में दलित जीवन की विभिन्न समस्याओं, यातनाओं एवं अत्याचारो को अभिव्यक्त करते हुए दलित समाज को जाग्रत करने का प्रयास किया है। शोषित मानव की आह ही उनकी कविता है। ओमप्रकाश वाल्मिकि अपनी कविताओ में चारों वर्णों के समाज द्वारा थोपे गए नियमों को चुनौती देते हैं। भाग्य, ईश्वर, नियति के विरोध वाल्मिकि उनके पीछे व्याप्त स्वार्थ एवं षडयंत्र को उजागर करते है। उनकी कविताएँ दलित जीवन की करुण अभिव्यक्ती है, जो गहराई तक कचोटती है।"[7] वाल्मिकी की कविता में सौंदर्य जाती, धर्म, लिंग, स्थान आदि में न होकर मानवीय गुणों के संघर्ष में है। उनकी कविता शोषण के जाने - माने हथियारों से निर्मित सामाजिक ताने-बाने को नकारकर न्यायपरक समाज का पुनर्निर्माण करती नजर आती है। इस प्रकार उनके काव्य सृजन में आन्तरिक यथार्थ स्पष्ट नजर आता है।

संदर्भसूची:

1. सं.हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,औरंगाबाद, काव्य कुसुम?, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.1, बी,नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002, प्र.वर्ष-2022 पृ. 63.
2. ओमप्रकाश वाल्मिकि, दलित साहित्यः अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, प्र.वर्ष 2020 पृ. 26
3. सं. हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,औरंगाबाद, काव्य कुसुम?, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.1, बी,नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002, प्र. वर्ष-2022 पृ. 63.
4. सं. हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,औरंगाबाद, काव्य कुसुम?, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.1, बी,नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002, प्र. वर्ष-2022 पृ. 63.
5. सं. हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,औरंगाबाद, काव्य कुसुम?, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.1, बी,नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002, प्र. वर्ष-2022 पृ. 63-64
6. सं. हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,औरंगाबाद, काव्य कुसुम?, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.1, बी,नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002, प्र. वर्ष-2022 पृ. 64.
7. https://www.apnimaati.com/2021/07/blog-post-43.html.

◇◇◇

Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 259 (B)

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता

Guest Editor -
Dr. Babasaheb M. Gore,
Principal,
Janvikas Mahavidyalaya Bansarola,
Tq.- Kaij, Dist.- Beed

Executive Editors :
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade
Dr. Gopal S. Bhosale
Dr. Ramesh M. Shinde
Dr. Arvind A. Ghodke

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	उत्तर भारत की रामलीला की विशेषताएं	डॉ. अमिला दमयंती	07
2	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा	प्रधानाचार्य डॉ. बाबासाहेब गोरे	10
3	प्रतिरोध की आत्माभिव्यक्ती : शिकंजे का दर्द	डॉ. रमेश शिंदे	14
4	हिंदी उपन्यासो में आदिवासी विमर्श	डॉ. के. बी. गंगणे	19
5	हिंदी कहानियों में किन्नर विमर्श	डॉ. विरश्री आर्य	22
6	हिंदी साहित्य में दलित चेतना	डॉ. विश्वनाथ भालेराव	26
7	भारत के सांस्कृतिक संघर्ष में दलित साहित्य की भूमिका	प्रा. किरण भोसले	29
8	मराठी लेखक श्रेणीक अन्नदाते की कहानियों में व्यक्त जैन जीवन	डॉ. महावीर उदगीरकर	33
9	वैश्विकरण और बाजारवाद के दौर में हिंदी की बदलती भूमिका	डॉ. यशोदा मेहरा	37
10	हिंदी की वैश्विक स्थिति	डॉ. रेविता कावळे	40
11	भारतीय संस्कृति तथा प्राचीन साहित्य	डॉ. कुमारी प्रेमलता	43
12	'जूठन' आत्मकथा में दलित विमर्श	अमृता तौर, डॉ. बी . आर. नळे	47
13	भारत की धार्मिक एंव व्यापारिक यात्राएं : धर्म संस्कृति एंव भाषाओं की संवाहक	डॉ. संदीप कालभोर	50
14	समकालीन हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श	डॉ. अमरनाथ तिवारी	53
15	हिंदी साहित्य की महिला प्रवासी साहित्यकार	डॉ. द्वारका गीते - मुंडे	57
16	विश्व साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य का योगदान	डॉ. अमित शुक्ल	60
17	स्त्री विमर्श का सौदर्य : जोतिबा फुले	छत्रसींग तडवी	64
18	कृष्णा सोबतीं के उपन्यासो में नारी का संघर्ष	डॉ. गजानन बने	67
19	छायावादी काव्य में सांस्कृतिक चेतना	डॉ. ज्ञानेश्वर गाडे	69
20	लोकसाहित्य में लोकगीतों का महत्व	डॉ. नरसिंगदास बंग	72
21	सांस्कृतिक पर्व और मुस्लिम कथाकार	डॉ. यतींद्र सिंह	75
22	आदिवासी जन-जीवन एवं वर्तमान शिक्षा व्यवस्था	डॉ. मो. माजिद मियाँ	79
23	मराठी दलित साहित्य का हिंदी साहित्यपर प्रभाव	डॉ. सुधीर वाघ	84
24	वैश्विक परीदृश में भारतीय संस्कृति और साहित्य : हिंदी उपन्यासों के संदर्भ में	डॉ. कल्पना पाटोळे	87
25	भारतीय संस्कृति और साहित्य	डॉ. अंजली कायस्था	90
26	भारतीय संस्कृति और साहित्य	विनिता कुमार	95
27	भारतीय संस्कृति व संस्कार	डॉ. सुषमा पुरवार	98
28	भारतीय संस्कृति और साहित्य	डॉ. अनिता प्रजापत	102
29	भारतीय संस्कृति और साहित्य	डॉ. राम खलंग्रे	105
30	समकालीन आदिवासी कविता के नये स्वर	डॉ. अनिलकुमार राठोड, प्रा. हिरामण टोंगारे	109
31	आदिवासी लोकसाहित्यातील स्त्री –जीवनाचा समाजशास्त्रीय अभ्यास	डॉ. गंगाराम सुरेवाड	113
32	भारतीय संस्कृति एवं साहित्य	डॉ. अमिता श्रीवास्तव	117
33	भारतीय संस्कृति और साहित्य	प्रा. सुनील शिंदे	121
34	कृष्णा सोबती की कहानियों में व्यक्त नारी समस्याएँ	डॉ. वंदन जाधव	123

SCAN AnyScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue -259 (B) 'वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्परिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श

डॉ. के. बी. गंगणे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
सुंदरराव सोलंके महाविद्यालय, माजलगांव
जिला बीड़ 431 131(महाराष्ट्र)
kbgangane@gmail.com

बहुत लंबी यात्रा कर चुकी मानवता के बीच उसी के इर्द-गिर्द एक और मानवता है जो अति प्राचीन काल से प्रकृति के सानिध्य में अपनी अनूठी शैली का जीवन जीती चली आयी और भौतिक प्रगति की दृष्टि से अब भी कमोबेश वहीं की वहीं है ।अपने आदिम सरोकारों और संस्कारों के साथ ,जिसे हमने 'आदिवासी 'नाम दिया है ।कम से कम इस महादेश और समाज के लिए यह वर्ग है जो निर्विवाद रूप से इस राष्ट्र के मूल वासी हैं।युग युगों से जिन्हें पहले समतलों से पहाड़ों- जंगलों में धकेला जाता रहा और अब वहां से भी खदेड़ा जा रहा है । विकास के नाम पर उन्हें विस्थापित किया जा रहा है । जिससे आदिवासी समाज में बदलते परिवेश में अनेक समस्या है निर्माण हो गई है ।जिसे समकालीन साहित्यकारों ने अपने साहित्य में चित्रित किया जिससे आदिवासी विमर्श का नया प्रवाह समकालीन भारतीय साहित्य में निर्माण हुआ ।

आदिवासी विमर्श समकालीन हिंदी साहित्य के विविध विमर्श में सबसे तेजी से उभरता हुआ विमर्श है। यूं तो आदिवासी विमर्श का प्रारंभ स्वतंत्रता से पहले ही हो चुका था ,किंतु सभ्य समाज एवं साहित्य की उपेक्षा से यह लंबे समय तक हाशिए पर ही रहा ।संविधान में मिले विशेष प्रावधानों एवं संवैधानिक अधिकारों के कारण सदियों से संघर्षरत आदिवासी प्रतिरोध करने एवं सामूहिक रूप से विद्रोह करने की चेतना का विकास हुआ। आज भूमंडलीकरण ,बाजारवाद की तरह आदिवासी विमर्श भी पूरे विश्व में समान संवेदना के साथ समझा जा रहा है ।हिंदी उपन्यास साहित्य में भी अनेक उपन्यास कारों ने आदिवासी समाज के जीवन संघर्ष को पूरी वास्तविकता के साथ चित्रित किया है ।हिंदी में आदिवासी जीवन पर केंद्रित अनेक उपन्यास लिखे गए जिसमें चर्चित रचनाएं रांगेय राघव का 'कब तक पुकारूं ',राजेंद्र अवस्थी 'का जंगल के फूल ',शिवप्रसाद सिंह का 'शैलुष ',संजीव का 'धार', 'जंगल जहां शुरू होता है', श्री प्रकाश मिश्र का 'जहां बास फूलते हैं' मैत्री पुष्पा का 'अल्मा कबूतरी', भगवानदास मोरवाल का 'काला पहाड़', रविंद्र का 'ग्लोबल गांव के देवता' महुआ मांझी का 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ,' राकेश वत्स का 'जंगल के आस पास' मधुकर सिंह का 'बाजद अनहद ढोल 'आदि महत्वपूर्ण रचनाएं हैं। डॉ. श्यामचरण दुबे कहते हैं," हिंदी उपन्यास की उल्लेखनीय सफलताओं के बावजूद भारत के सामाजिक यथार्थ के आकलन में उसकी सीमा और न्यूनताएँ चुभने वाली है ....।भूमिहीन खेतिहर बंधुआ मजदूरों और श्रमिकों पर जो लिखा गया है वह नाकाफी है और संतोषजनक भी नहीं ।आदिवासियों और दरिद्र समाज का दर्द भी अभिव्यक्त नहीं.....।"[१]

आदिवासी समाज का यथार्थ चित्रण जयसिंह के 'कलावे' उपन्यास में किया गया है । जिसमें भील आदिवासियों के कलावे नामक समुदाय के अंर्तसंघर्ष अभिव्यक्त हुए हैं । विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के संदर्भ में यह उपन्यास कलावे समुदाय के साथ संपूर्ण गांव का चित्रण करने में कामयाब हुआ है । जयप्रकाश भारती द्वारा लिखें 'कोहरे में खोए चांदी के पहाड़ ' में देहरादून के एक आंचल में वास करने वाले पहाड़ी आदिवासियों के सांस्कृतिक पक्ष की विस्तृत अभिव्यक्ति हुई है ।बहुपति परंपरा के पक्ष को इस उपन्यास में उभारा आ गया है

SCAN AnyScanner

।लेखक ने टिप्पणी की है कि , 'अज्ञान एवं अंधविश्वास के कोहरे में चांदी के पहाड़ ढके हुए हैं और जब तक गरीबी, अंधविश्वास ,अज्ञान एवं अनैतिक शोषण का अंत नहीं होगा तब तक इस अंचल का विकास असंभव है। तेजिंदर का उपन्यास 'काला पादरी 'को आदिवासी जीवन की अभिव्यक्ति की एक अधिकारीक कृति कही जा सकती है। जिसमें दो संस्कृतियों की टकराहट से पैदा होने वाली जटिलताओं का खूबसूरत चित्रण हुआ है। इस उपन्यास के केंद्र में धर्मान्तरण है और प्रमुख आदिवासी पात्र अपने परंपरागत धर्म को छोड़कर ईसाई बन जाता है।

श्री प्रकाश मिश्र के ' जहां बांस फूलते हैं ' उपन्यास में मिजोरम के आदिवासी संघर्ष की कथा का वर्णन किया गया है। जो उपन्यासकार के प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर है। डॉ.महेंद्र भटनागर ने इस उपन्यास के बारे में लिखा है कि , "प्रसिध्द उपन्यास ऐतिहासिक न होते हुए भी इतिहास से संबंध है , तमाम घटनाचक्र इतिहास सम्मत है, उसमें कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं.....। एक संपूर्ण जनजाति की गाथा है, उसमें मिजो विद्रोह का क्रमिक विवरण है। किसी भी डॉक्यूमेंट्री फिल्म की तरह।" [२] इस उपन्यास का केंद्रीय तत्व है कि व्यवस्था के विरुद्ध मिजो आदिवासी हथियार उठाने से नहीं चूकते और सामंती शोषण के प्रतिनिधियों के विरुद्ध मोर्चा खोलते हैं। शायद हिंदी में पूर्वोत्तर के जीवन को गहराई से समझने और समझाने वाला यह पहला उपन्यास है।

हमारी सामाजिक व्यवस्था आदिवासियों को हमेशा समाज के निचले पायदान पर खड़ा करती है और उन्हें अपनी बुनियादी जरूरतों और अधिकारों से वंचित रखती है। सत्ताधारी वर्ग भी आदिवासी जनजातियों के सामाजिक जीवन में अयाचित घुसपैठ कर रहे हैं और प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा जमा कर उन्हें हर स्तर पर विस्थापित करते हुए उनके अस्तित्व को भी चुनौती दिए जा रहे हैं। रमणिका गुप्ता का यह शब्द देखिए ," विकास के नाम पर आदिवासी को विस्थापित कर जंगल और जल से वंचित कर जंगलों से बाहर खदेड़ा जा रहा है। वह प्रकृति से संवाद करता चलता है , उसका सहयात्री है , उसको गाय की तरह पलता और दुक्षता है "[३] इन प्रकृति - पुत्रों पर जो हमला हो रहा है वह हमारे सांस्कृतिक पतन का सूचक है। इसलिए इस अप्रत्याशित परिवेश में आदिवासियों के मुक्ति संघर्ष को अपनी रचना धर्मिता का आधार बना लेते हैं संजीव। इस दृष्टि से उनके उपन्यास 'सावधान नीचे आग है ' , ' धार ' , 'पांव तले की दूब ' और ' जंगल जहां शुरू होता है ' विशेष ध्यातव्य है।' सावधान नीचे आग है ' में संजीव ने बिहार के झरिया- धनबाद कोयला क्षेत्र में मजदूरी करने वाले आदिवासियों की अभावग्रस्त जिंदगी को बड़ी शिद्दत के साथ उकेरने का प्रयास किया है। खदान माफिया , इजारदार , सूदखोर और दलालों के बहुआयामी शोषण से आदिवासी मजदूरों की जिंदगी बहुत सोचनीय बन गई। सत्ता एवं सामंती शक्तियां मिल कर अंगारडीह के आदिवासियों की जमीन हड़पने की कोशिश करती हैं। ' धार 'उपन्यास को आदिवासी विद्रोह की अनोखी दास्तान माना सकता है। लेखक ने संथाल परगना और छोटा नागपुर के कोयला खदानों में काम करने वाले श्रमजीवी आदिवासियों की बदहालत को उजागर करने का प्रयास किया है। उपन्यास में महेंद्र बाबू सरीके शोषकों के शिकंजे से मुक्त करने के लिए अविनाश शर्मा और संथाली नारी मैना संथाल आदिवासियों में नई चेतना भरने की जबरदस्त कोशिश करती है। ' पाव तले की दूब 'में शोषण के प्रति झारखंड आदिवासियों के सक्रिय विद्रोह का जीता जागता चित्र है। औद्योगिक विकास परियोजनाओं के नाम पर झारखंड के आदिवासी समाज को अन्याय ,शोषण ,बेदखली विस्थापन जैसी अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है। ' जंगल जहां शुरू होता है ' में संजीव आदिवासी लोगों की अज्ञानता जागरण का अभाव अपने अधिकारों के प्रति अनभिनज्ञता आदि पर् वे विशेष बल देते हैं। उपन्यास में मास्टर मुरली पांडे डी.एम.पी. कुमार और आदिवासी युवक काली अपने-अपने ढंग से आदिवासी समाज में सुधार लाने का प्रयत्न करते हैं। भारतीय समाज में व्यवस्था द्वारा उपेक्षितों के प्रति नकारात्मक रूख, पूंजीपतियों के अमानवीय उत्पीड़न, प्रशासन और पूंजीपतियों की मिलीभगत से विवश होकर जनजातीय समाज के सदस्य प्रचुर मात्रा में अपराधी बन रहे हैं। इस समस्या के तरफ

भी संजीव इस उपन्यास के माध्यम से प्रश्न निर्माण करते हैं। " संजीव के उपन्यास साहित्य की खासियत यह है कि उनमें समाज के उपेक्षित वह हशिएकृत वर्ग को विशेषकर आदिवासी जन समुदाय को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की जबरदस्त कोशिश विद्यमान है। "4

अल्मा कबूतरी ' आदिवासी कबूतरा जाती पर केंद्रित है। इसमें मैत्रेयी पुष्पा ने एक ऐसे समाज को प्रस्तुत किया है जिसमें नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय है। अल्मा प्रस्तुत उपन्यास का केंद्रीय नारी पात्र है उसके जीवन संघर्ष को प्रस्तुत रचना में चित्रित किया है। आदिवासी कबूतरा समाज में पंचायत को बहुत अत्यधिक महत्व है। पंचायत के सभी निर्णय को मानना ही पड़ता है। उपन्यास में आदिवासी कबूतरा जाति के लोक संस्कृति का यथार्थ चित्रण हुआ है साथ ही अल्मा के माध्यम से आदिवासी औरत का संघर्ष एवं उसकी अदम्य जिजीविषा को दर्शाया है। ' ग्लोबल गांव के देवता ' रणेन्द्र का झारखंड के आदिवासी '.असुर ' को केंद्र में रखकर रचा गया है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। इस उपन्यास का महत्व इस दृष्टि से भी बढ़ जाता है कि इसमें असुर जनजाति के सामाजिक , सांस्कृतिक वशिष्ट्य को बड़ी खूबसूरती से चित्रित किया गया है। इसमें असुर समुदाय की ऐतिहासिक विकास यात्रा पर प्रकाश डाला है। साथ ही उनके जीवन संघर्ष को भी प्रस्तुत किया है। 'जंगल के फूल ' राजेंद्र अवस्थी द्वारा लिखित बहुचर्चित उपन्यास है। जो मध्यप्रदेश के बस्तर के गोंड आदिवासियों के जीवन को अंकित करता है। उपन्यास का नायक सुलकसाये है जो गढ़बंगाल के मुखिया का बेटा है। उपन्यास की नायिका गढ़बंगाल की लड़की महुआ है। दोनों प्रेमी है लेकिन इनमें देश सेवा के भाव के कारण वे आजन्म अविवाहित रहना चाहते हैं। उपन्यास में आदिवासी जीवन , देशप्रेम , अंग्रेज शासकों के खिलाफ आदिवासियों की नीति को भी उजागर किया है। डॉ. परदेसी के शब्दों में, " इसमें एक और आदिवासियों की संस्कृति , रीति-रिवाजों को चित्रित किया है तो दूसरी ओर अंग्रेजी शासन काल में आदिवासियों द्वारा किए गए विद्रोह को अंकित किया गया है।" ५

निष्कर्ष: कहा जा सकता है कि भारत के दुर्गम पर्वत श्रंखलाओ में बसे आदिवासियों का जीवन विभिन्न समस्याओं से भरा पड़ा है। औद्योगिक विकास के नाम पर आदिवासियों का वलि दिया जाता है। विकास के नाम पर उनकी जमीन हड़प ली जाती है। डाकू बनने के लिए मजबूर किया जाता है। जल ,जमीन, जंगल ,भाषा और संस्कृति आदिवासियों की अस्मिता है। आज वैश्वीकरण के दौर में आदिवासियों की सभ्यता और संस्कृति को समझने की प्रयास नहीं किए गए उन्हें उनकी जल , जमीन ,जंगल से वेदखल किया जा रहा है। उन्हें संवैधानिक अधिकारों से वंचित रखा गया है। अंधविश्वास रुढियां,अशिक्षा , अज्ञान ,शोषण आदि के कारण आदिवासी समाज में अनेक समस्याएं निर्माण हो गई है। इसी आदिवासी जीवन संघर्ष को हिंदी उपन्यास कारों ने अपने साहित्य में व्यापक स्तर पर रेखांकित करने का प्रयास किया है।

संदर्भ :

१. आदिवासी दुनिया- हरिराम मीणा, पृष्ठ -१९२
२. आदिवासी दुनिया - हरिराम मीणा, पृष्ठ- १९५
३. समकालीन हिंदी साहित्य और नए विमर्श - डॉ. प्रमोद कोवप्रत, पृष्ठ -७३
४. समकालीन हिंदी साहित्य और नए विमर्श - डॉ प्रमोद कोवप्रत, पृष्ठ- ७३
५. राजेंद्र अवस्थी का कथा साहित्य - डॉ.भाऊसाहेब परदेशी, पृष्ठ- ४५

SCAN AnyScanner

SJIF Impact Factor - 5.67 E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी के 75 वर्ष का हिंदी साहित्य

अतिथि संपादक
प्रोफेसर रजनी शिखरे
प्राचार्य
र. भ. अट्टल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय गेवराई
जि. बीड महाराष्ट्र

कार्यकारी संपादक

डॉ. गजानन चव्हाण
प्रधान सचिव
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो.डॉ.जिजाबराव पाटील
अध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रा.संतोष नागरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
र. भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ
For Details Visit To - www.aimrj.com

Scanned with CamSc

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B) SJIF Impact- 5.67

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023

Special Issue 07 Volume III (B)

आज़ादी के 75 वर्ष का हिंदी साहित्य

अतिथि संपादक
प्रोफेसर रजनी शिखरे
प्राचार्य
र. भ. अट्टल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय गेवराई ज़ि. बीड महाराष्ट्र

कार्यकारी संपादक

डॉ. गजानन चव्हाण
प्रधान सचिव
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो.डॉ.जिजाबराव पाटील
अध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रा.संतोष नागरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
र. भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

Scanned with CamSc

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B) SJIF Impact- 5.67

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	विवाह विच्छेद के बच्चों पर दुष्प्रभाव (विशेष संदर्भ: आपका बंटी)	डॉ.रजनी शिखरे प्रा.हिरा पोटकुले	05
2	इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित वृद्ध विमर्श (समय सरगम और गिलिगडू : विशेष संदर्भ)	प्रो.डॉ.जिजाबराव व्ही. पाटील प्रा.दिलीप पंडीत पाटील	08
3	नारी जीवन की यथार्थता का चिंतन ('दहेज' प्रथा और 'बलात्कार' की समस्या के विशेष संदर्भ में)	डॉ. आर. के. जाधव	10
4	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में स्त्री विमर्श	प्रो. रजनी शिखरे / संतोष नागरे	13
5	आजादी के 75 वर्ष के बाद भी हिंदी लोकगीतों का महत्त्व	डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर	16
6	आज़ादी का अमृत महोत्सव और बदलता महानगरीय परिवेश (कुसुम अंसल की कहानी के संदर्भ में)	डॉ. सुनील बापू बनसोडे	18
7	स्वातंत्रोत्तर हिंदी कविता में कृषक और उसकी संघर्ष चेतना	डॉ.सपना तिवारी	21
8	'रागदरबारी' उपन्यास की प्रासंगिकता'	डॉ.शेख शहेनाज अहेमद	25
9	हिंदी उपन्यास और आदिवासी समुदाय का यथार्थ चित्रण	प्रा.डॉ शंकर गंगाधर शिवशेट्टे	29
10	लीलाधर जगूड़ी का काव्य: आज़ादी का मोहभंग के परिपेक्ष्य में	डॉ. शरद शेषराव कदम	32
11	गिलिगडू उपन्यास में महानगरीय बोध	प्रा. शुभदा शिवाजी आरडे	35
12	हिन्दी साहित्य में सामाजिक तथा राष्ट्रीय चिंतन	डॉ. सुमेध पी. नागदेवे	37
13	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी कविता का योगदान	श्रीमती सुपर्णा गंगाधर संसुद्धी	41
14	आजादी के 75 वर्ष का हिंदी काव्य	समृद्धि संजय सुर्वे डॉ .अनिल विश्वनाथ काळे	43
15	स्वाधीनता के बाद हिंदी कहानी का विकास	डॉ. शिवाजी गंगाधर सुरवसे	45
16	स्वातंत्र्योत्तर भारत की विसंगतियों का महत्वपूर्ण दस्तावेज : 'पूरब खिले पलाश'	संतोष नागरे	47
17	मोहनदास नैमिशराय के आत्मकथा में चित्रित दलित समस्याएँ (अपने – अपने पिंजरे के विशेष संदर्भ में)	प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे	51
18	नारी की चिरन्तन पीड़ा और अन्याय की अभिव्यक्ति : अहल्या	डॉ. मारोती यमुलवाड	54
19	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविताओं में आदिवासी विमर्श	प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर	57
20	परिवार विघटन की त्रासदी और उदय प्रकाश की कहानियॉ	डॉ.युवराज राजाराम मुळये डॉ.काकासाहेब भागुराम गंगणे	59
21	आजादी के 75 वर्ष का कथा साहित्य	डॉ. पिरू आर. गवळी	62
22	'कुमाऱ्जीव'में चित्रित विविध आयाम	सुश्री प्रतिक्षा शिवाजी तनपुरे	65
23	इक्कीसवी शती की महिला कहानीकारों के कथा साहित्य में अभिव्यक्त नारी विमर्श	प्रा. सपना पाटील	68
24	स्वातंत्र्योत्तर कालीन हिंदी बाल कहानी-साहित्य में बाल-मनोविज्ञान	इगडे शितल कचरु	70
25	आजादी के 75 वर्ष का हिंदी आत्मकथा साहित्य	डॉ. संजीवकुमार नरवाडे	74
26	"रागदरबारी" उपन्यास में चित्रित व्यंग्यात्मक यथार्थ	कु. माधुरी सुरेश ठाकरे	78
27	नागार्जुन की कविताओं में विषय विविधा	डॉ. मिलिंद साळवे	80

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B) SJIF Impact- 5.67

20

परिवार विघटन की त्रासदी और उदय प्रकाश की कहानियाँ

डॉ.युवराज राजाराम मुळये
हिंदी विभाग प्रमुख,
श्री. सिध्देश्वर महाविद्यालय, माजलगांव,
तहसिल, माजलगांव, जिला बीड़

डॉ.काकासाहेब भागुराम गंगणे
हिंदी विभाग प्रमुख,
सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय, माजलगांव,
तहसिल, माजलगांव, जिला, बीड़

प्रस्तावना :

उदय प्रकाश ने अपने कहानी संग्रह के माध्यम से सामाजिक जीवन के वास्तविकता को उजागर किया है। वर्तमान काल में संयुक्त परिवार नष्ट होकर पारिवारिक विघटन हो रहा है। परिणामस्वरूप अनेक समस्याएँ सामने आ रही है। वैश्वीकरण के दौर में हर राष्ट्र प्रगति कर रहा है। भारत भी इस प्रतियोगिता में पीछे नहीं है, लेकिन भारत में परंपरा से निर्माण जातिभेद से देश प्रगति नहीं कर रहा है। जातिभेद के कारण तेढ़ निर्माण होकर समाज में अराजकता फैली हुई है। इस कारण सामाजिक पतन हो रहा है। भारत में परंपरा से रूढ़ी और गलत धारणाएँ बरकरार है। इससे समाज का पतन हो रहा है। ऐसी प्रवृत्ति पर उदय प्रकाश ने लेखनी चलाई है। समाज में विकास के लिए अनेक लोग कार्यरत है। फिर भी कुछ लोग भ्रष्टाचार, अनैतिकता, मूल्यहीनता आदि को अपना रहे है। इसलिए समाज का नुकसान हो रहा है। इस संदर्भ में डॉ. चैतन्यकुमार लिखते है कि, ''आधुनिकीकरण से समाज विकास की राह पर चल रहा है। फिर भी समाज में भ्रष्टाचार, मूल्यहीनता, सांस्कृतिक अध:पतन, अनैतिकता आदि धारणाओं को अपनानेवाले लोग है। इससे समाज पतन की राह पर चल रहा है।'' [१] इस प्रकार सामाजिक पतन दिखाई देता है।

परिवार विघटन :

उदय प्रकाश ने परिवार विघटन को अपने कहानियों का विषय बनाया हैं। वर्तमान काल में अनेक कारणों से परिवार विघटन हो रहा हैं। भारत में प्राचीन काल से संयुक्त परिवार दिखाई देते थे। सब मिलकर अपना परिवार आगे बढ़ाने का प्रयास करते थे। संयुक्त परिवार के कारण उनका सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक अलग महत्व था। वर्तमान काल में इसके संदर्भ बदल गए हैं। आज संयुक्त परिवार समाप्त होकर एकल परिवार निर्माण हो गए हैं। वर्तमान काल में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, आधुनिकीकरण, शहरीकरण एवं शिक्षा के प्रभाव से एकल परिवार निर्माण हो रहे हैं। इस संदर्भ में डॉ. चैतन्य पाटील लिखते है कि, ''आज संयुक्त परिवार नष्ट होकर एकल परिवार निर्माण हो गए है। भारत में परंपरा से संयुक्त परिवार विद्यमान थे। सब मिलजुलकर आपस में भावनीय सन्मान रख कर रहते थे। वर्तमान काल में स्वार्थ केंद्रीत एवं भोगवादी मानसिकता पनपने से संयुक्त परिवार बिखर गया है। औद्योगिकीकरण, आधुनिकीकरण एवं शहरीकरण से लोग भावुनिकता के स्थान पर स्वार्थी मानसिकता रखकर जीवन जी रहे हैं। इससे एकल परिवार निर्माण हो कर अनेक समस्याओं का सामना मनुष्य को करना पड़ रहा है।'' [२] इस प्रकार संयुक्त परिवार नष्ट होकर एकल परिवार निर्माण हो गये है। जिससे परिवार विघटन होकर लोगों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैं।

वर्तमान काल में महानगरीय जीवन से अनेक परिवार विघटीत हो रहे हैं। महानगरों में फ्लैट बंद संस्कृति बढ़ने से परिवार विघटित हो रहे हैं। एक फ्लैट में रहनेवाला निकट के दूसरे फ्लैट में रहनेवाले से परिचित नहीं हैं। गाँव के संयुक्त परिवार में समस्याएँ एक–दूसरे से बाँट दी जाती थी और उनका हल निकाला जाता था। महानगरीय फ्लैट बंद संस्कृति में समस्याएँ बताना तो दूर की बात हैं, उनमें बातचित भी नहीं होती है। किसी फ्लैट में मृत्यु हो जाती है तो भी किसी को पता नहीं चलता। परिवार विघटन का भयानक वास्तव आज हमारे सामने आ रहा हैं। इस एकल परिवार में बूढे लोगों की भयानक त्रासदी हैं। प्रारंभ में बूढे लोग गाँव में रहते थे लेकिन बेटे के नौकरी के कारण महानगरो में आना पड़ता हैं। उस माहौल से वे एकाग्र नहीं होते हैं। परिणामस्वरूप वे घुटन भरी जिंदगी जिते है।

भारत में प्राचीन काल से बूढ़े लोगों को संयुक्त परिवार में मान और सम्मान था। उन्हें मातृ देवो भव:, पितृ देवो भव: का सम्मान दिया जाता था। हमारी पुरानी संस्कृति आदर्शवादी थी। वर्तमान काल में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव एवं आधुनिकीकरण से हमारे आदर्श संस्कृति एवं संयुक्त परिवार विघटित हो रहे है। इस संदर्भ में डॉ. विशाखा शर्मा लिखती है कि, ''भारत की संस्कृति महान हैं। उसमें विद्यमान संयुक्त परिवार आदर्श हैं, इन परिवारवालों में बूढे दादा–दादी, माता–पिता को सम्मान दिया जाता था। वे अपने संस्कार, विचार, मूल्य, ज्ञान, आचार–विचार अगली पिढ़ी को विरासत के रूप में देते थे। वर्तमानकाल में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण एवं आधुनिकीकरण से संयुक्त परिवार विघटित होकर एकल परिवार निर्माण हो रहे हैं। जिसके अंतर्गत न प्रेम, न माया, न विचार हैं। उसमें सिर्फ

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B) SJIF Impact- 5.67

स्वार्थांधता एवं भोगविलासिता दिखाई देती हैं। इस प्रवृत्ति के कारण परिवार विघटित हो रहे हैं।'' [3] इस प्रकार की प्रवृत्ति के कारण परिवार विघटीत हो रहे है।

उदय प्रकाश ने अपनी कहानियो मे परिवार विघटन का चित्रण किया है। उनके 'रूक्कू' कहानी में परिवार विघटन का चित्रण आ गया है। प्रस्तुत कहानी में एक अबला युवती एवं उसके बच्चे की करूण गाथा का अंकन लेखक ने किया है। इन पात्रों के साथ नियती दुबारा क्रूर, विडंबना होने का चित्रण आ गया है। इस कहानी का लेखक अपने परिवार के साथ छोटे से कमरे में रहता हुआ नजर आता है। लेखक के घर के आस–पास काम करने के लिए माया नामक नौकरानी आती थी। उसके परिवार का विघटन होने के कारण वह अकेला पड़ गई थी। उसका एक छोटा बच्चा था, जिसका नाम रूक्कू था। रूक्कू नामक बच्चा बहुत सुंदर था। उसकी आँखें चिड़ियाँ की तरह थी। लेकिन लेखक सोचता है कि इतने सुंदर बच्चे बड़े होने के बाद कहा चले जाते है। उनकी सुंदरता कहा खो जाती है। लेखक के शब्दों में, 'मैंने देखा, उसकी आँखे सचमुच किसी चिड़िया की आँखें जैसी थी। बाद में बड़े होने पर बच्चे ये आँखें कहा खो देते हैं।' इस प्रकार बच्चों के सौंदर्य बिखरता है। लेखक उसे छूट्टे पैसे देकर पान की दुकान के पास चला जाता है। उसी दौरान एक प्राइवेट बस से रूक्कू का अपघात हो जाता है। उस दुर्घटना में रूक्कू का शरीर गाड़ी के टकराव से सड़क से चिपक जाता है और वहीं पर उसकी मौत हो जाती है। माया यह सब देखकर पत्थर की मूर्ती सी खड़ी हो जाती है। उसका सहारा था वह भी चला गया था। वह भी सब विघटित हो गया था। इसे लेखक ने अपने कहानी के माध्यम से रेखांकित करने का प्रयास किया है।

उदय प्रकाश ने 'तिरिछ' कहानी के माध्यम से परिवार विघटन पर लेखनी चलाई है। प्रस्तुत कहानी में मौसाजी पूर्व स्वातंत्र्य सेनानी रहे हैं। वे परिवार विघटन से पीड़ित है। वे सदैव झूठे संसार में विचलन करते हुए नजर आते हैं। वे अपना संसार का विघटन न हो इसलिए सदैव प्रयासरत रहते हैं। वे अपने परिवार के कारण दयनीय जीवन जीने के लिए बाध्य है।

लेखक ने 'दद्दू तिवारी : गणनाधिकारी' कहानी में परिवार विघटन का चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी में दद्दू तिवारी पर भी परिवार विघटन की नौबत आ जाती है। वे एक पूल पर गाड़ियाँ गिनने का काम करते है। उनके उपर के अधिकारी उसका अपमान करते हैं। तब उसे परिवार की याद आ जाती है। दद्दू तिवारी गाँव छोड़कर शहर में आ गया था। दद्दू तिवारी महत्त्वकांक्षी व्यक्ति है। उसके सारे लोग गाँव में बसे हैं। कुछ पाने के लिए दद्दू तिवारी गाँव छोड़कर शहर आता है। लेकिन अंत में अपने परिवार और परिवेश से विघटित होकर रह जाता है।

उदय प्रकाश ने 'छपन्न तोले का करधन' कहानी में परिवार विघटन का चित्रण किया हैं। यह कहानी उत्तर आधुनिकता से प्रभावित हैं। प्रस्तुत कहानी की दादी अमानवीयता का शिकार हैं। भारत में परंपरा से मातृ देव भवं की संस्कृ ति विदयमान थी, पर वर्तमान काल में इस संस्कृति का पूरी तरह से पतन हो गयां हैं। स्वार्थांधता प्रवृत्ति एवं धन के लालच से परिवार का विघटन हो रहा हैं। बुढ़ापा तो एक अभिशाप बन गया हैं। अब बूढ़े लोगों की ओर बहु, बेटा या बेटी ध्यान नहीं दे रहे हैं। परिणामस्वरूप बूढ़े लोगों का जीवन नरकमय बन गया हैं। लेखक के शब्दों में, ''बुढ़िया को उसके बेटे–बेटी और बहुओं ने रौख नरक में डाल दिया हैं। भगवान किसी को ऐसा बुढ़ापा दिखाने के पहले ही उठा लें।'' [4] इस प्रकार परिवार विघटन हो रहा हैं।

उदय प्रकाश ने 'नेलकटर' कहानी में परिवार से कटे एक माँ की जीवन की वास्तविकता को बयान किया है। उसके पति का देहांत हो गया है। इसलिए वह परिवार से कटकर रह जाती है। वह अपने पति के लाये हर चीज को संभालकर रखती है। 'नेलकटर' भी उसके पति ने कुंभ मेला से लाया था। माँ ने उसे बहुत संभालकर रखा है। वह अपने पति के देहांत के बाद एक बच्चे की तरह व्यवहार करती थी। स्पष्ट है कि वह अपने परिवार एवं परिवेश से कटकर रह गई थी। इस प्रकार उदय प्रकाश ने परिवार विघटन को चित्रित किया है। लेखक के 'नेलकटर' कहानी में परिवार विघटन का चित्रण आ गया है। प्रस्तुत कहानी में माँ के जीवन पर लिखी हुई हैं। माँ बोलने में असमर्थ हैं। वह एक बच्चे के तरह व्यवहार करती हैं। उसके पति गुजर जाने के बाद वह पूरी तरह से टुट जाती हैं। उसका परिवार बिखर जाता है। इस कहानी से उस माँ की भावनाओं को व्यक्त किया हैं। इस संदर्भ डॉ. पी. जे. शिवकुमार लिखते है कि, ''नेलकटर' उदय प्रकाश द्वारा अपनी ही माँ पर लिखी कहानी हैं। यह दुनिया की रित है कि कुछ व्यक्तियों के मर जाने के बाद हम उन्हें उन चीजों से याद करते हैं जो अंतिम समय में उनसे जुड़ी रहती हैं। इस कहानी में नेलकटर भी इसी प्रकार की एक वस्तू है जिसे पिताजी कुंभ मेला से लाये थे। बोलने में असमर्थ माँ की व्यथा को एक मासूम बच्चे की तरह कहानीकार ने व्यक्त किया है।'' [5] इस प्रकार पारिवारिक वास्तविकता को उजागर करने का काम लेखक ने किया है। लेखक ने 'दिल्ली की दीवार' कहानी में विघटन की वास्तविकता को स्पष्ट किया हैं। प्रस्तुत कहानी में दिल्ली के महानगर का चित्रण आ गया हैं। इस शहर के अधिकतर लोग आधे अधूरे नजर आते हैं। अधिकतर परिवार विघटीत दिखाई देते हैं। आज शहरों में एकल परिवार की प्रवृत्ति बढ़ रही हैं। जिससे संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं। प्रस्तुत कहानी में सफाई कर्मचारियों की वास्तविकता को उजागर किया हैं। शहर में परिवार हो या माहौल विघटीत नजर आता हैं। प्रस्तुत कहानी में राम निवास इसके सार्थक उदाहरण हैं। लेखक के शब्दों में,

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2023 Special Issue 07 Volume III (B) SJIF Impact- 5.67

"रामनिवास कई महीनों से इन नुक्कड़ पर नहीं दिखा। अब वह कहीं नहीं दिखेगा। सुषमा भी उसका कोई जिक्र नहीं करती। मैंने पहले ही बताया था कि यह एक ऐसा जीवन है, जिसमें कभी भी कहीं नहीं दिखता। बाद में उसकी स्मृति बाकी नहीं बचती।" [६] इस प्रकार विघटीत प्रवृत्ति को सामने लाने का काम लेखक ने किया है।

निष्कर्ष :–

उदय प्रकाश ने अपने कहानियों के माध्यम से परिवार विघटन की त्रासदी की पैरवी की है। इसमें परिवार विघटन, जातिभेद या छुआअ छूत, अनैतिकता, मूल्य विघटन, स्वार्थ केंद्रित एवं भोगवादी जनजीवन, मानवीयता का अभाव एवं शोषण की प्रवृत्ति पर लेखनी चलाई है। आज मनुष्य पाश्चात्य का प्रभाव एवं आधुनिक जीवनशैली को अपना रहा है। वह वास्तविक जीवन को नकारकर कृत्रिम जीवन के पिछे दौड़ रहा है। भारत में परंपरा से संयुक्त परिवार बरकरार थे, लेकिन उत्तर आधुनिकता, शहरीकरण एवं पाश्चात्य संस्कृति के कारण आदर्श संस्कृति को लोग नकारकर गलत संस्कृति के पीछे दौड़ रहे हैं। परिणामस्वरूप सांस्कृतिक पतन हो रहा है। साथ ही शहरीकरण की ओर युवा वर्ग आकर्षित होने से एकल परिवार निर्माण हो रहे हैं। समाज में बेरोजगारी, नैतिक पतन, आर्थिक चिंता आदि कारणों से परिवार विघटित हो रहे है। उदय प्रकाश ने अपने कहानियों के माध्यम से परिवार विघटन की प्रवृत्ति को सामने लाने का काम किया है। उनके 'रूक्कू' कहानी में परिवार विघटन की त्रासदी को अभिव्यक्त किया है। साथ ही मौसाजी (दरियाई घोडा), 'राम सजीवन की प्रेमकथा' (तिरिछ), और 'द्दद्दू तिवारी : गनणाधिकारी' (तिरिछ) आदि कहानियों के माध्यम से परिवार विघटन को सामने लाने का काम किया है। भारत में परंपरा से जातिभेद या छुआछूत की प्रवृत्ति दिखाई देती है। लोकतंत्र एवं संविधान तैयार होने से इसकी मात्रा कम हो गई है। पर आज भी समाज में जातिभेद की मानसिकता नजर आती है। उदय प्रकाश ने 'पीली छतरीवाली लड़की' एवं 'मोहनदास' कहानी संग्रह में इस प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है। लेखक ने अनैतिकता की घिनौनी मानसिकता पर भी लेखनी चलाई है। समाज मे परंपरा से यौन उत्पीड़न दिखाई देता है। आज विज्ञापन के कारण अनैतिकता को बढ़ावा मिल रहा है। कानून से बचने के रास्ते होने के कारण बलात्कार को बढ़ावा मिल रहा है। साथ ही अप्राकृतिक मैथून की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इस त्रासदवादी मानसिकता एवं अनैतिकता को सामने लाने का काम लेखक ने किया है। उनके 'वॉरन हेस्टींग्ज का साँड़' कहानी में अनैतिकता का चित्रण आया है। 'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी में सुनीता नामक पात्र अनैतिकता का सहारा लेकर रातोरात मालामाल हो जाती है। 'मैगोसिल' कहानी में दिल्ली के अवैध बस्तिओं में चलनेवाले अनैतिकता का चित्रण किया है। 'सायरन' कहानी में शिक्षा सचिव की अनैतिकता को दर्शाया है। 'पीली छतरीवाली लड़की' कहानी बाजार का बॉडिग विज्ञापन एवं अनैतिकता को दर्शाता है।

AMRJ

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

१. डॉ. चैतन्य कुमार, आधुनिकीकरण एवं मानव, पृ. क्र. २१७.
२. डॉ. चैतन्य पाटील, प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति, पृ. क्र. २०७.
३. डॉ. विशाखा शर्मा, हिंदी कहानियों में परीवार, पृ. क्र. ८८.
४. उदय प्रकाश, तिरिछ, पृ. क्र. ६१.
५. डॉ. शिवकुमार पी. जे., उदय प्रकाश की कहानियों में समकालीन समाज एवं समस्याएँ, पृ. क्र. ७२
६. संपा. डॉ. नामवर सिंह, आलोचना, अप्रैल–जून, २०००, पृ. क्र. २३७

Scanned with CamSc